Vol III Issue IX March 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF) ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

भैरव थाट जन्य राग भैरव का ऐतिहासिक विवेचन

Tajinder Singh

Head Deptt of Music , Akal Degree College, Mastuana Sahib, Sangrur, Punjab, India.

सारांश :-भैरव राग को भारतीय शास्त्री संगीत का सबसे प्राचीन तथा प्रसिध्द रागों में से एक माना जाता है। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक युग के लगभग सभी ग्रन्थों में इसकी गणना प्रमुख रागों में की गई है। सर्वप्रथम भैरव शब्द का प्रयोग चौथी शताब्दी में मंतगमुनि द्वारा रचित ग्रन्थ बृहददेशी में मिलता है जिस में इसे मध्यम ग्राम की तान के लिए प्रयुक्त किया गया जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है।

प्रस्तावना :

"भैरवकामदरचैय आकृशृौजश्य पालकः।
इति मध्यमग्राम औडवित तानमामानि।"[1]

अर्थात भैरव सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला और अपने पालने (अर्थात धारण करने वाले) को आकृष्ट एवं अजश्य बनाता है। इस प्रकार से मध्यम ग्राम 'औडव' इन तानों का नाम हुआ।

संगीत समयसार में आचार्य पार्श्वदेव राग भैरव के विषय में लिखते हैं।
"भन्नशडजसमुदभूतो मन्यासो धांसभूशितः।
समस्वरो रिमत्यकतः प्रार्थने भैरवः स्मृतः।।[2]

भिन्न शड़ज से उत्पन्न मेरे अनुसार ये 'धा' अंश से भूशित हुआ। स म स्वरों से युक्त और रे प से रहित प्रार्थना (पूजन) के लिए भैरव को याद किया जाता था।

नारद कृत संगीत मकरन्द' (समय लगभग ग्यारवी शताब्दी) ग्रन्थ में सर्वप्रथम राग–रागिनी का वर्गीकरण प्राप्त होता है। जिसमें छः प्रमुख राग तथा इनकी तीस रागिनीयां मानी गई है। इस के प्रमुख छः रागों में भैरव को प्रथम स्थान प्राप्त है। राग–रागिनी वर्गीकरण के चार शिवमत, भरत मत, कृष्ण मत तथा चारों मतों में भैरव को मुख्य राग माना गया है। यही नही सिक्ख धर्म के पवित्र ग्रन्थ 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के अन्त में भी राग माला दर्ज है जिसके अर्न्तग्त भी राग–रागनियों का अल्लेख प्राप्त होता है। इस ग्रन्थ में भी भैरव राग को प्रथम राग में से एक माना गया है।

" यूशम गग उैग्डि दै रग्गी" [3]————————————

"मध काल विच राग रागिणी परम्परा दे अर्न्तगत भरत मत, हनुमत, रागारवण मत अते श्री गुरू साहब विच अखीर ते अंकित 'राग माला' दे अधीन इस नू पहला राग मनिया है। जदकि सोमेश्वर अते कालीनाथ मत विच इस नू तिसरा स्थान प्राप्त है।"[4]

उपरोक्त तथ्य के अनुसार भैरव राग को पहला, दूसरा, तीसरा कोई भी स्थान प्राप्त हो परन्तु यह बात जरूर है कि भैरव राग की गणना मुख्य छः रागों की गई है।

"तेरहवीं शताबदी में शाडंग्देव कृत संगीत रत्नाकर' में भैरव तथा शुध्द भैरव' में भैरव ग्राम राग भिन्न शडज पर आधारित बतलाया गया है जो कि शडजोदीच्यवा नामक जाति का ग्राम राग है। राग भैरव में ऋशभ व पंचम स्वर वर्जित है। ग्रह एवं अंश स्वर धैवत तथा न्यास मध्यम स्वर पर होता है।"[5]

उपयुक्त प्रमाण के अनुसार भैरव को स ग म ध नि अर्थात पांच स्वरों का औडव राग माना गया है जो कि आधुनिक राग भिनन शड़ज

(शुध्द मालकौंस) से मिलता है। प्रो. करतार सिंह अपनी पुस्तक 'गुरमति संगीत दर्पण' में पंडित लोचन का प्रमाण देते हुए लिखतें हैं कि "लोचन पंडित ने 'राग–तरगिणी' 15वीं शताबदी विच 12 थाटां तों 75 जन्य रागां दा वर्गीकरण कीता है, ते गौरी थाट तो भैरव नू जन्य राग मन्या है।"[6]

पंडित सोमनाथ ने अपने ग्रन्थ 'राग विबोध' समय (16वीं) शताब्दी में 23 मेन गाने है तथा राग भैरव को भैरव मेल से उत्पन्न माना है। राग विबोध में भैरव का स्वरूप इस प्रकार लिखा है।

"धांशग्रहसंन्यासःसंपूर्णो भैरवःप्रातः"[7]

अर्थात इसका ग्रह व अंश स्वर धैवत तथा न्यास धैवत व शडज पर होता है। यह सम्पूर्ण जाति का राग है तथा इसका समय प्रातः काल है।

कुछ विध्दानों का मानना है कि सोलवीं शताबदी के संत गायक पुरन्दर दास ने भैरव थाट का प्रचार दक्षिण में किया। इस सम्बन्ध में आचार्य बृहस्पति जी अपने ग्रन्थ 'संगीत चिंतामणी' में लिखते हैं "सोलहवी शती ईस्वी के पूर्वार्ध्द में दक्षिण के प्रसिध्द संत गायक पुरंदरदास भैरव ठाठ को उत्तर भारत से दक्षिण ले गए और उन्होंने ही कर्नाटक संगीत में राग शिक्षा का मूल आधार इस राग को बनाया।"[8]

इसी युग के ग्रन्थकार रामामात्य ने अपने ग्रन्थ 'स्वरमेलकलानिधि' से भैरव ठाठ का उल्लेख 'मालवगौंड' मेल से किया है। रामामात्य के अनुसार यह मेल 'मालव' एवं 'गौड़' के देशों का प्रचलित मेल है शायद इसी वजह से उन्होने भैरव को 'मालवगौड' की संज्ञा दी।

सत्रहवीं शताबदी में अहोबल पंडित जी द्वारा रचित ग्रन्थ 'संगीत पारिजात' में राग भैरव तथा बसंत भैरव का उल्लेख बडे ही सपश्ट रूप में प्राप्त होता है। संगीत पारिजात में भैरव का स्वरूप कुछ इस प्रकार दिया गया है।

"भैरवे तु रि–पौ नस्तो धादिमे न्यासमध्यमे।
तत्रक्तौ तु गनी तीव्रौ कोमलो धैवतः स्मृतः।।"[9]

अर्थात– "भैरव राग में ऋषभ व पंचम दोनो स्वर नस्त (वर्जित) होते हैं। अतः इसकी जाति औडव–औडव जाति है। गंधार निशाद दोनो तीव्र (शुध्द) तथा धैवत इसमें कोमल कहा गया है। धैवत पर इसका आदि स्वर (ग्रह तथा मध्यम पर न्यास होता है।" [10]

'संगीत पारिजात' में राग बसंत भैरव का स्वरूप इस प्रकार लिखा गया है।
"कोमलाख्यो रि–धौ तीव्रौ ग–नी वसन्तभैरवे।
धैवतांशग्रहन्योसो मध्यमांशोपि सम्मतः।।" [11]

अर्थात राग 'वसन्त भैरव' में ऋषभ व धैवत दोनो स्वर कोमल तथा गन्धार व निशाद स्वर तीव (शुध्द) प्रयोग होते हैं। धैवत ही इसका अंश, ग्रह तथा न्यास स्वर है। इस प्रकार भैरव स रे ग म ध नि सं शाडव जाति का राग बनता है। तृप्ति अग्रवाल इस सबंधित लिखती है कि "इस राग में ऋषभ व धैवत स्वर कोमल और गंधार व निशाद स्वर तीव्र प्रयुक्त होते है। पंचम स्वर वर्जित होने से यह शाडव शाडव जाति का राग है। इस राग में केवल पंजम स्वर मिलने से आधुनिक सम्पूर्ण सम्पूर्ण भैरव की प्राप्ती होती है।" [12]

भैरव स ग म ध नि पांच स्वरों से धीरे धीरे छः तथा अन्त स रे ग म प ध नि सात स्वरों का सम्पूर्ण जाति का राग बना। जिस में ऋषभ व धैवत स्वर कोमल तथा अन्य स्वर शुध्द प्रयोग किऐ जाते है। वादी धैवत तथा संवादी ऋषभ तथा इसका समय प्रातः कालीन है पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी से लेकर आधुनिक सभी विध्दान आचार्य बृहस्पति, कृष्ण राउ शंकर पंडित, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज जी, गुरमति संगीत के विध्दान, डा.गुरनाम सिंह, प्रो करतार सिंह सभी ने भैरव का यही स्वरूप सवीकार किया है।

1 कु. तृप्ति अग्रवाल, संगीत (जून 2011) पृष्ठ–34
2 संगीत समयसार, आचार्य पार्शर्वदेव, आचार्य बृहस्पति, द्वारा संशोधित, पृष्ठ–79
3 श्री गुरू ग्रन्था साहेब, पृष्ठ–1429
4 डा.राजेश शर्मा, अमृत कीर्तन (सितंम्बर 2011) पृष्ठ–18
5 कु. तृप्ति अग्रवाल, संगीत (जून 2011) पृष्ठ–35
6 प्रो.करतार सिंह, गुरमति संगीत दर्पण, (भाग–2), पृष्ठ–212
7 अहोबल पंडित, संगीत पारिजात, पृष्ठ–149
8 आचार्य बृहस्पति, संगीत चिंतामणि, प्रथम खंड, पृष्ठ–305
9 अहोबल पंडित, संगीत पारिजात, पृष्ठ–148
10 वही
11 अहोवल पंडित, संगीत पारिजात, पृष्ठ–148
12 कु.तृप्ति अग्रवाल, संगीत, (जून 2011) पृष्ठ–36

Tajinder Singh
Head Deptt of Music , Akal Degree College, Mastuana Sahib, Sangrur, Punjab, India.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net